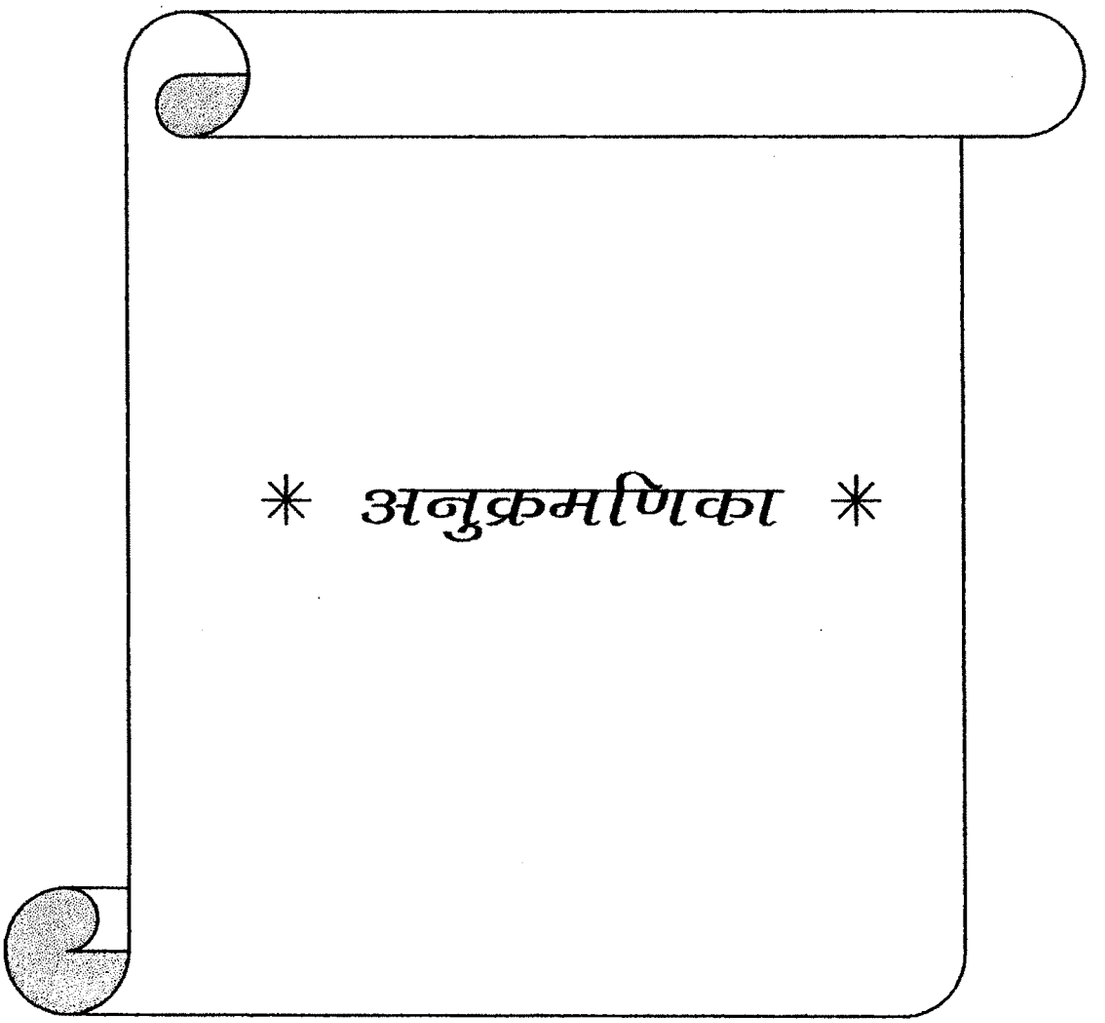

* अनुक्रमणिका *

: अनुक्रमणिका :

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय : हिंदी और मराठी आँचलिक उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय । 1 से 26

1.1 'अंचल' शब्द की व्युत्पत्ति।

1.2 आँचलिक उपन्यास की परिभाषा।

1.3 हिंदी आँचलिक उपन्यासों का सामान्य परिचय ।

1.3.1 वृंदावनलाल शर्मा ।

1.3.2 देवेन्द्र सत्यार्थी।

1.3.3 उदयशंकर भट्ट।

1.3.4 रांगेय राघव।

1.3.5 नागार्जुन।

1.3.6 अमृतलाल नागर।

1.3.7 डॉ. प्रतापनारायण टंडन।

1.3.8 शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'।

1.3.9 बलवंत सिंह।

1.3.10 फणीश्वरनाथ 'रेणु'।

1.3.11 भैरवप्रसाद गुप्त।

1.3.12 बलभद्र ठाकुर।

1.3.13 शिवप्रसाद सिंह।

1.3.14 रामदरश मिश्र।

1.3.15 अमरकांत।

1.3.16 शैलेश मटियानी।

1.4 मराठी आँचलिक उपन्यासों का परिचय।

1.4.1 श्री. व्यंकटेश माडगूळकर।

1.4.2 गो. नी. दांडेकर।

पृष्ठ संख्या

1.4.3 बा. भ. बोरकर।

1.4.4 रा. रं. बोराडे।

1.4.5 आनंद यादव।

1.5 आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ।

1.5.1 भौगोलिक विशेषता।

1.5.2 लोकसंस्कृति का पुनरुत्थान।

1.5.3 विशिष्ट भाषा।

1.5.4 सामाजिक जीवन - वातावरण।

1.5.5 राजनीतिक जागरण।

1.5.6 अर्थ व्यवस्था।

निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय : फणीश्वरनाथ 'रेणु' और गो. नी. दांडेकर का व्यक्तित्व और कृतित्त्व । 27 से 61

2.1 फणीश्वरनाथ 'रेणु' का व्यक्तित्त्व।

2.1.1 रेणु का गार्हस्थ जीवन।

2.1.2 शिक्षा- दीक्षा।

2.1.3 रेणु का राजनीतिक जीवन।

2.1.4 रेणु का स्वभाव वैशिष्ट्य ।

2.2 फणीश्वरनाथ 'रेणु' का कृतित्त्व।

2.2.1 'रेणु' की आँचलिक कहानियाँ।

2.2.2 'रेणु' के उपन्यास।

2.2.3 'रेणु' की अभिव्यक्ति के विविध रूप।

2.2.3.1 'रेणु' के रिपोर्ताज।

2.2.3.2 'रेणु' के संस्मरण।

2.2.3.3 'रेणु' के रेखाचित्र।

पृष्ठ संख्या

2.3 गो. नी. दांडेकर का व्यक्तित्त्व।

2.3.1 गो. नी. दां. का रहनसहन।

2.3.2 गो. नी. दां. की रूचियाँ।

2.3.3 गो. नी. दां. की स्वभावगत विशेषताएँ।

2.3.4 गो. नी. दां. का शिवप्रेम।

2.3.5 गो. नी. दां. का प्रकृति प्रेम।

2.3.6 गो. नी. दां. का भ्रमण जीवन।

2.3.7 गो. नी. दां. की बीमारी तथा उनका देहांत।

2.4 गो. नी. दां. का कृतित्त्व।

2.4.1 गो. नी. दां. के उपन्यास।

2.4.1.1 गो. नी. दां. के आँचलिक उपन्यास।

2.4.1.2 ऐतिहासिक उपन्यास।

2.4.1.3 सामाजिक उपन्यास।

2.4.1.4 पौराणिक उपन्यास।

2.4.1.5 संतों पर लिखे उपन्यास।

2.4.1.6 आत्मचरित्रात्मक उपन्यास।

2.4.2 गो. नी. दां. की कहानियाँ।

2.4.3 गो. नी. दां. के नाटक।

2.4.4 संगीतिका।

2.4.5 चरित्र- आत्मचरित्र।

2.4.6 धार्मिक तथा पौराणिक लेखन।

2.4.7 यात्रा और यात्रावर्णन।

2.4.8 कुमार साहित्य।

2.5 निष्कर्ष।

पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय : आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से 'मैला आँचल' और 'पडघवली' की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन। 62 से 101

3.1 उपन्यास की कथावस्तु के तत्त्व।

3.1.1 कथावस्तु और घटना।

3.1.2 कथावस्तु की अभिव्यक्ति शैली।

3.1.3 कथानक का चुनाव और संगठन।

3.1.4 कुतूहलोद्दीपन।

3.1.5 संभाव्यता।

3.1.6 संगठितता।

3.2 आँचलिक कथावस्तु के तत्त्व।

3.2.1 कथागत बिखराव।

3.2.2 कथा की योजना।

3.2.3 विशेष क्षेत्र।

3.2.4 यथार्थ चित्रण।

3.2.5 कल्पना का स्थान।

3.2.6 प्रेमतत्त्व।

3.2.7 आँचलिक जीवन की समस्याएँ।

3.2.8 समाहार की विशिष्टता।

3.3 'मैला आँचल' की कथावस्तु।

3.4 आँचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' की कथावस्तु।

3.4.1 कथागत बिखराव।

3.4.2 विशेष आँचलिक क्षेत्र ।

3.4.3 यथार्थ चित्रण ।

3.4.4 कल्पना का स्थान ।

3.4.5 प्रेमतत्त्व ।

पृष्ठ संख्या

3.4.6 आँचलिक जीवन की समस्याएँ।

3.4.7 समाहार की विशिष्टता।

3.5 'पडघवली' की कथावस्तु।

3.6 आँचलिकता की दृष्टि से पडघवली की कथावस्तु।

3.6.1 कथागत बिखराव।

3.6.2 विशेष आँचलिक क्षेत्र।

3.6.3 यथार्थ चित्रण।

3.6.4 कल्पना का स्थान।

3.6.5 आँचलिक जीवन की समस्याएँ।

3.6.6 समाहार की विशिष्टता।

निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के चरित्र चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन। 102 से 175

4.1 'मैला आँचल' उपन्यास के पात्रों का चरित्रचित्रण।

4.1.1 डॉ. प्रशांत।

4.1.2 बालदेव।

4.1.3 कालीचरन।

4.1.4 बावनदास।

4.1.5 अन्य पुरूष पात्र।

4.1.6 कमली।

4.1.7 लछ्मी।

4.1.8 ममता।

4.2 आँचलिक चरित्र चित्रण की विशेषताएँ।

4.2.1 पात्रकल्पना।

4.2.1.1 उच्च वर्ग।

पृष्ठ संख्या

4.2.1.2 मध्य वर्ग।

4.2.1.3 निम्न वर्ग।

4.2.2 सामान्य विशेषताएँ।

4.2.3 चरित्र कल्पना।

4.3 पात्रों की विशिष्टता वर्गविभाजन के आधारपर।

4.3.1 उच्च वर्ग।

4.3.2 मध्य वर्ग।

4.3.3 निम्न वर्ग।

4.4 सामान्य विशिष्टताएँ।

4.5 चरित्र कल्पना।

4.6 'पडघवली' उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण।

4.6.1 अंबू।

4.6.2 फुफेरी सास।

4.6.3 अन्य पात्र।

4.6.4 व्यंकूभट।

4.6.5 महादेव भट।

4.6.6 गुजा भट।

4.6.7 अन्य पात्र।

4.7 पात्र कल्पना।

4.7.1 पात्रों की विशिष्टता वर्ग विभाजन के आधार पर।

4.7.1.1 उच्च वर्ग।

4.7.1.2 मध्य वर्ग।

4.7.1.3 निम्न वर्ग।

4.8 सामान्य विशेषताएँ।

4.9 चरित्र कल्पना।

पृष्ठ संख्या

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय : आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों की भाषाशैली का तुलनात्मक अध्ययन। 176 से 218

5.1 आँचलिक भाषा। ('मैला आँचल')।

5.2 संवाद या वार्तालाप के तत्त्व।

5.3 'मैला आँचल' उपन्यास के संवाद।

5.3.1 यथार्थ का अभास।

5.3.2 अनुकूलता।

5.3.3 संक्षिप्तता।

5.3.4 भावानुकूल।

5.4 आँचलिक उपन्यासों के संवादों के तत्त्व। ('मैला आँचल')

5.4.1 संवादों में विविधता।

5.4.2 समूह वार्तालाप-शैली।

5.4.3 स्वगत संवाद।

5.5 आँचलिक भाषा ('पडघवली')।

5.6 'पडघवली' उपन्यास के संवाद।

5.6.1 यथार्थ का अभास।

5.6.2 संक्षिप्तता।

5.6.3 भावानुकूल।

5.6.4 अनुकूलता।

5.7 आँचलिक उपन्यासों के संवादों के तत्त्व ('पडघवली')

5.7.1 संवादों में विविधता।

5.7.2 स्वगत संवाद।

5.8 शैली।

निष्कर्ष।

		पृष्ठ संख्या
षष्ठ अध्याय : आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के देश-काल-वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।		**219 से 234**
6.1	देश-काल-वातावरण के तत्त्व।	
6.1.1	भौगोलिक परिवेश।	
6.1.2	सामाजिक वातावरण।	
6.1.3	प्राकृतिक वातावरण।	
6.2	'मैला आँचल' उपन्यास का देश-काल-वातावरण।	
6.3	'पडघवली' उपन्यास का देश-काल-वातावरण।	
6.4	निष्कर्ष।	
सप्तम अध्याय : आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के उद्देश्य का तुलनात्मक अध्ययन।		**235 से 250**
7.1	आँचलिक उपन्यास के उद्देश्य।	
7.2	'मैला आँचल' उपन्यास का उद्देश्य।	
7.3	आँचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' उपन्यास के उद्देश्य।	
7.3.1	अंचल का समग्र चित्रण	
7.3.2	मानवतावादी दृष्टि।	
7.4	'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य।	
7.5	आँचलिकता की दृष्टि से 'पडघवली' उपन्यास के उद्देश्य।	
7.5.1	अंचल का समग्र चित्रण।	
7.5.2	मानवतावादी दृष्टि।	
	निष्कर्ष।	
उपसंहार		**251 से 263**
संदर्भ ग्रंथ सूची		**264 से 267**

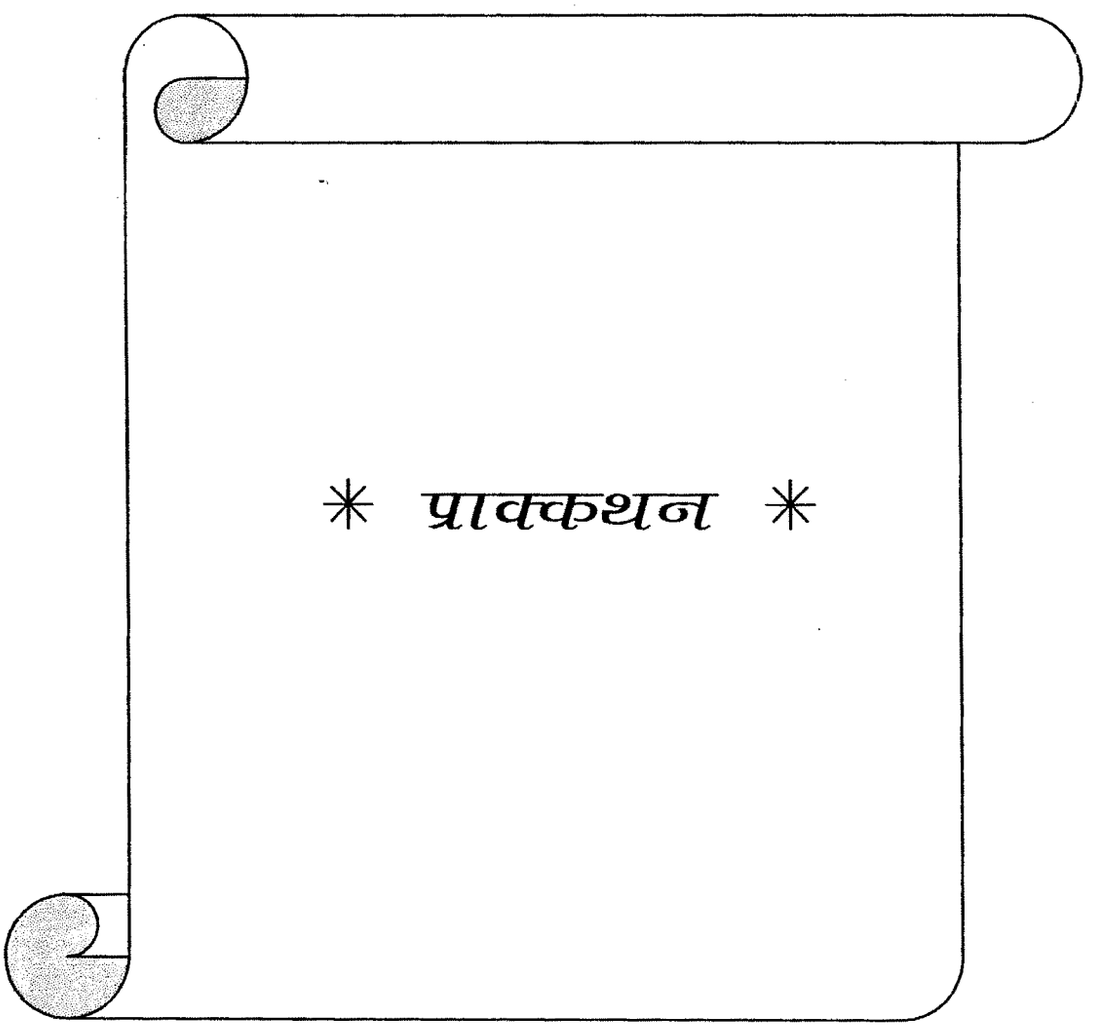

✳ प्राक्कथन ✳

प्राक्कथन

विषय चुनाव क्यों ?

फणीश्वरनाथ रेणु और गो. नी. दांडेकर पर संप्पन शोधकार्य :-

(1) फणीश्वरनाथ रेणु के आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' में चित्रित समाज इस विषय पर वंदना मोहिते ने लघु प्रबंध लिखा है।

(2) गो. नी. दांडेकर यांच्या कादंबऱ्यातील स्त्री जीवनाचे चित्रण 'शितू' व 'मृण्मयी' के आधारापर इस विषयपर गोगी सुजाता देवीदास ने लघु प्रबंध लिखा है।

इस प्रकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' और दांडेकर के साहित्य कृतियों पर अलग अलग शोधकार्य संप्पन्न हुआ है, परंतु आज तक इन दो साहित्यिकों के किसी दो समानधर्मीय उपन्यासों पर तौलनिक दृष्टि से शोध कार्य नहीं हुआ है। इसीलिए मैंने इस विषय का चुनाव किया।

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से अध्याय विभाजन निम्नप्रकार किया है -

प्रथम अध्याय :-

हिंदी और मराठी आँचलिक उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय।

द्वितीय अध्याय :-

फणीश्वरनाथ 'रेणु' और गो. नी. दांडेकर व्यक्तित्व और कृतित्व।

तृतीय अध्याय :-

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से 'मैला आँचल' और 'पडघवली' की कथावस्तु का तुलनात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय :-

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के चरित्रचित्रण का तुलनात्मक अध्ययन।

पंचम अध्याय :-

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों की भाषाशैली का तुलनात्मक अध्ययन।

षष्ट अध्याय :-

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के देश-काल-वातावरण का तुलानात्मक अध्ययन।

सप्तम अध्याय :-

आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के उद्देश्य का तुलनात्मक अध्ययन।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्न प्रश्न थे -

(1) आँचलिक तत्त्वों की दृष्टि से क्या दोनों उपन्यास सफल हैं ?

(2) इन दो उपन्यासों की समानताएँ कौनसी हैं ?

(3) इन दो उपन्यासों की अपनी अपनी विशेषताएँ कौनसी हैं ?

(4) इन दो उपन्यासों के उद्देश्य क्या हैं ?

अनुसंधान के बाद मिले इन प्रश्नों के उत्तर उपलब्धियों के तौर पर उपसंहार में दिये हैं।

ऋणनिर्देश :-

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष सहाय्यता करनेवाले तथा मुझे समय समय पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों एवं आत्मीयों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

यह लघुशोध प्रबंध श्रध्येय गुरूवर्य डॉ. वसंतरावजी मोरे एम. ए., पीएच् .डी. भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के अथक कार्यशील और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की प्रेरणा और निर्देशन के कारण ही संपन्न हो सका है। उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन मुझे इस शोधकार्य में हमेशा अग्रेसर करता रहा है। मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. पी. एस. पाटीलजी, एम.ए. पीएच. डी., अध्यक्ष हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यायल का मार्गदर्शन मेरे लिए बहुमूल्य रहा है। मार्गदर्शन के लिए श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाणजी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

पितृतुल्य गुरूवर्य प्रा. मा. के. तिवलेजी निवृत्त अधिव्याख्याता हिंदी विभाग, शहाजी महाविद्यालय, कोल्हापुर का सतत मार्गदर्शन मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है।

यह लघु शोध-प्रबंध मेरे पिताजी आर. बी. पाटील भूतपूर्व मुख्याध्यापक विक्रम हायस्कूल कोल्हापुर और माताजी सौ. विजयादेवी की प्रेरणा का फल है। इस शोध प्रबंध के लिए मेरे जीजाजी व्ही. के. पाटील और भगिनी सौ. मधुलिना का सहयोग बहुतही महत्त्वपूर्ण रहा है। मैं उनसे उऋण होना नहीं चाहूँगी।

इस प्रबंध को सुचारू बनाने में सहयोग देनेवाले श्री. मिलिंद भोसले जी का हार्दिक धन्यवाद।

शोध छात्रा

सरोज रा. पाटील